सीपीईसी (CPEC) का दूसरा चरण

प्रिलिम्स के लिये:

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, ग्वादर पोर्ट, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, स्ट्रिंग्स ऑफ पर्ल्स, पनामा नहर, एलओसी।

मेन्स के लिये:

भारत के हितों पर देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव, भारत को शामिल और/या इसके हितों को प्रभावित करने वाले समूह और समझौते, सीपीईसी और इसका प्रभाव।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पाकिस्तान ने 60 बिलियन अमेरिकी डॉलर के चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) के दूसरे चरण को शुरू करने हेतु चीन के साथ एक नए समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं।

- इससे पहले अरबों डॉलर के **चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)** बुनियादी ढांचा परियोजना में शामिल होने को लेकर पाकिस्तान ने तालिबान के नेतृत्व वाले अफगानिस्तान के साथ चर्चा की थी।
- दूसरा चरण मुख्य रूप से विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) के विकास और औद्योगीकरण के इर्द-गिर्द घूमता है।

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा:

- CPEC चीन के **उत्तर-पश्चिमी झिंजियांग उइगुर स्वायत्त क्षेत्र और पाकिस्तान के पश्चिमी प्रांत बलूचिस्तान** में ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाली बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं का **3,000 किलोमीटर** लंबा मार्ग है।
- यह **पाकिस्तान और चीन के बीच एक द्विपक्षीय परियोजना** है, जिसका उद्देश्य ऊर्जा, औद्योगिक और अन्य बुनियादी ढाँचा विकास परियोजनाओं के साथ राजमार्गों, रेलवे एवं पाइपलाइन्स के नेटवर्क द्वारा पूरे पाकिस्तान में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना है।
- यह चीन के लिये ग्वादर बंदरगाह से मध्य पूर्व और अफ्रीका तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करेगा ताकि चीन हिंद महासागर तक पहुँच प्राप्त कर सके तथा चीन बदले में पाकिस्तान के ऊर्जा संकट को दूर करने और लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिये पाकिस्तान में विकास परियोजनाओं का समर्थन करेगा।
- CPEC, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव **(BRI)** का एक हिस्सा है। वर्ष 2013 में शुरू किये गए 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' का उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य एशिया, खाड़ी क्षेत्र, अफ्रीका और यूरोप को भूमि एवं समुद्री मार्गों के नेटवर्क से जोड़ना है।

CPEC पर भारत का रुख:

- **CPEC को लेकर भारत ने चीन के समक्ष विरोध** जताया है क्योंकि पाकिस्तान का कब्ज़ा वाला कश्मीर (PoK) क्षेत्र भी इसके तहत आता है।
- भारत, क्वाड **(भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान)** का सदस्य है जो बुनियादी ढाँचे हेतु देशों को यथार्थवादी विकल्प प्रदान कर सकता है एवं चीनी प्रतिक्रिया के लिये उपयुक्त हो सकता है।
  - **उदाहरण के लिये:** ब्लू डॉट नेटवर्क **(BDN)** और 'बिल्ड बैक बेटर वर्ल्ड (B3W) पहल'।

भारत के लिये CPEC के निहितार्थ:

- **भारत की संप्रभुता:** भारत CPEC की लगातार आलोचना करता रहा है, क्योंकि यह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुज़रता है, जो भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवादित क्षेत्र है।
- कॉरिडोर को भारत की सीमा पर स्थित कश्मीर घाटी के लिये वैकल्पिक आर्थिक सड़क संपर्क के रूप में भी माना जाता है।
- **नियंत्रण रेखा (एलओसी)** के दोनों ओर कश्मीर को 'विशेष आर्थिक क्षेत्र' घोषित करने के लिये स्थानीय व्यापारियों और राजनीतिज्ञों द्वारा आह्वान किया गया है।

- अगर गलिगति-बाल्टस्तिान औद्योगकि वकिास के साथ वदिशी नविश को आकर्षति करता है, तो CPEC के सफल होने के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त पाकिस्तानी क्षेत्र के रूप में इस क्षेत्र की धारणा को और मज़बूती मलिगी, जसिसे 73,000 वर्ग कमिी. भूमि पर भारत का दावा कमज़ोर हो जाएगा जो कि 1.8 मलियिन से अधकि लोगों का घर है।
- **समुद्र के माध्यम से व्यापार पर चीनी नयिंत्रण:** पूर्वी तट पर प्रमुख अमेरिकी बंदरगाह चीन के साथ व्यापार करने के लयि **पनामा नहर** पर नर्भिर हैं।
    - एक बार CPEC का कार्य पूरा हो जाने के बाद चीन अधकिांश उत्तरी व लैटनि अमेरिकी उद्यमों के लयि एक 'छोटा और अधकि कफिायती' व्यापार मार्ग की पेशकश करने की स्थति में होगा।
    - यह चीन को उन शर्तों को नर्धिारति करने की शक्ति देगा जनिके द्वारा अटलांटकि एवं प्रशांत महासागरों के बीच माल की अंतर्राष्ट्रीय आवाज़ाही होगी।
- **चीन की 'स्ट्रगि ऑफ पर्ल्स' नीत:** चीन अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ हदि महासागर में उपस्थति बिढ़ा रहा है; यह अमेरिका द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है और अक्सर भारतीय रक्षा वशि्लेषकों द्वारा हवाई क्षेत्रों व बंदरगाहों के नेटवर्क के माध्यम से भारत को घेरने की चीनी रणनीति को संदर्भति करने के लयि इस्तेमाल कयि जाता है।
    - चटगाँव बंदरगाह (बांग्लादेश), हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका), पोर्ट सूडान (सूडान), मालदीव, सोमालयिा और सेशेल्स में मौजूदा उपस्थति के साथ कम्युनस्टि राष्ट्र (चीन) द्वारा ग्वादर बंदरगाह पर नयिंत्रण के माध्यम से हदि महासागर पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापति करना है।
- **आउटसोर्सगि गंतव्य के रूप में पाकस्तिान का उदय:** यह पाकस्तिान की आर्थकि प्रगति को गति देने हेतु तैयार है।
    - मुख्य रूप से कपड़ा और नर्मिाण सामग्री उद्योग में भारत व पाकस्तिान की दोनों देशों के शीर्ष तीन व्यापारकि भागीदारों में से दो देश अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात में सीधी प्रतस्पिर्द्धा है।
    - मुख्य रूप से भारतीय नर्यिात चीन से कच्चे माल की सुलभ आपूर्ति के साथ पाकस्तिान को इन क्षेत्रों में एक प्रतस्पिर्द्धी क्षेत्रीय बाज़ार बनने हेतु उपयुक्त परस्थितियाँ उपलब्ध होंगी।
- **BRI द्वारा मज़बूत व्यापार और चीन का प्रभुत्व: चीन की बीआरआई परयिोजना जो बंदरगाहों, सड़कों और रेलवे के नेटवर्क के माध्यम से चीन और शेष यूरेशयिा के बीच व्यापार संपर्क पर केंद्रति है, को अक्सर इस क्षेत्र में राजनीतकि रूप से हावी होने की चीन की योजना के रूप में देखा जाता है। CPEC इसी दशा में एक और बड़ा कदम है।**
    - चीन जो कि बाकी वैश्वकि अर्थव्यवस्थाओं द्वारा समर्थति और अधकि एकीकृत है, संयुक्त राष्ट्र एवं अलग-अलग राष्ट्रों के साथ बेहतर स्थति में होगा, जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परषिद में भारत की स्थायी सीट हासलि करने की योजना को प्रभावति कर सकता है।

आगे की राह:

- CPEC पर भारत की भवषि्य की रणनीति BRI परयिोजना के संभावति लाभों के साथ-साथ नुकसान के सावधानीपूर्वक पुनर्मूल्यांकन पर आधारति होनी चाहयि।
- भारत को अपनी रणनीतकि परयिोजनाओं जैसे- बांग्लादेश, चीन, भारत और म्याँमारआर्थकि गलयिारे (BCIM) और चाबहार बंदरगाह के वकिास पर कार्य की गति को तीव्र करना चाहयि।
- एशयिा-अफ्रीका ग्रोथ कॉरडिोर भारत-जापान आर्थकि सहयोग समझौता है, यह भारत को महत्त्वपूर्ण रणनीतकि लाभ प्रदान कर चीन को प्रतसिंतुलति कर सकता है।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/second-phase-of-cpec